सर्वशक्तिमान् ईश्वरों के समान आचरण कोई नहीं कर सकता। भगवान् शिव सागर के परिमाण में विष का पान कर गए, जबकि यदि कोई साधारण मनुष्य उस विष के विन्दु-मात्र को भी पीने का प्रयत्न करे तो वह तत्क्षण मृत्यु का ग्रास हो जाय। भगवान् शिव के अनेक कपटी भक्त उनका अनुकरण करते हुए गांजा आदि मादक द्रव्यों के सेवन के लिए बड़े उत्सुक रहते हैं। परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि भगवान् शिव का इस प्रकार अनुकरण करके वे स्वयं अपनी मृत्यु के कारण बन रहे हैं। इसी भाँति, भगवान् श्रीकृष्ण के भी ऐसे अनेक कपटी भक्त हैं, जो उनके समान रासलीला तो करना चाहते हैं, परन्तु यह भूल जाते हैं कि उन्हीं भगवान् श्रीकृष्ण ने गोवर्धन-धारण भी किया था, जो उनकी शक्ति से बाहर की बात है। अतएव ईश्वरों के आचरण का अनुकरण न करते हुए उनकी शिक्षा का अनुसरण करना ही परम श्रेयस्कर है। इसके अतिरिक्त, पर्याप्त योग्यता के बिना उनके स्थान को ग्रहण करने का दुस्साहस नहीं करना चाहिये। तथापि, वर्तमान समय में ऐसे अनेक 'भगवत्-अवतार' प्रचलित हैं, जिनमें भगवत्-शक्ति का सर्वथा अभाव है।

12/3

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ।।२५।।

सक्ताः =आसक्त; **कर्मणि** =कर्म में; **अविद्वांसः** =अज्ञानी; **यथा** =जिस प्रकार; **कुर्वन्ति** =कर्म करते हैं; **भारत** =हे भरतवंशी; **कुर्यात्** =करे; **विद्वान्** =ज्ञानी; **तथा** =उसी भाँति; **असक्तः** =अनासक्त भाव से; **चिकीर्षुः** =चाहता हुआ; **लोकसंग्रहम्** =लोक-शिक्षा को।

अनुवाद

जिस प्रकार फल में आसक्त अज्ञानी कर्म करते हैं, वैसे ज्ञानी भी अनासक्त भाव से लोक-शिक्षा के लिये कर्म करे।।२५।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित पुरुष तथा कृष्णभावनाविहीन में इच्छा का ही भेद रहता है। कृष्णभावनाभावित महानुभाव ऐसा कोई कर्म नहीं करता, जिससे कृष्णभावना का विकास न हो। वह ठीक उस अज्ञानी के समान भी कर्म कर सकता है, जो लौकिक कर्मों में अत्यन्त आसक्त रहता है। परन्तु एक ओर जहाँ अज्ञानी कर्म में इन्द्रियतृप्ति के लिए तत्पर है, वहीं दूसरी ओर कृष्णभावनाभावित का लक्ष्य श्रीकृष्ण के सुख का विधान करना है। इसलिए यह आवश्यक है कि कृष्णभावनाभावित पुरुष साधारण जनता को कर्म करना और कर्मफल को कृष्णभावना में नियोजित करना सिखाए।

13/3

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्।।२६।।

न =नहीं; **बुद्धिभेदम्** =बुद्धि-भ्रम; **जनयेत्** =उत्पन्न करे; **अज्ञानाम्** =मूर्खों में; **कर्मसंगिनाम्** =सकाम कर्मों में आसक्ति वाले; **जोषयेत्** =कराये; **सर्व** =सब; **कर्माणि**